व्यथा-कथा अर दूजी कवितावां

अन्नाराम 'सुदामा'

॥ 'पिरोळ में कुत्ती ब्याई' रै बाद लेखक रो दूजी कविता संग्रै ॥

विगत

दो आखर

अै कवितावा, म्हारै कवि मर्म-सर्म पर, पछलै पाँच-सात बरसा मे लिखी है; सौखिया नही, जदकद ही बी पोखरी मे सामाजिक पीड रो कोई अणचार्यो भाठो आ पड्यो अर चेतना रो पाणी मथीज उठ्यो, का की अव्यवस्था रै अधेरै मे जबाव मागती कोई उदास लौ सामनै आ खडी हुई।

आजादी रै बाद, देस मे राजनीतिक ज्ञान अर बीरा गुर, अर वैज्ञानिक सुविधावा जरूर वध्या है, पण सगळै नही, 'ढबा खेती पखा न्याव' री विसम धरती पर ही। राजनीति री फुरती छाया नीचै, आदमी-आदमी विचाळै आतरो वाध्यो है अर वधतो ही जावै। आम आदमी रै अवखाया अर आपसी तणाव री खायाँ तर-तर चौडी अर गैरी हुई है, अर हुती ही जावै, विज्ञापन री कोयळ चावै कीं वोलती हुवै ?

मोंकडी छता अर तावडो झाकतै टैणाँ नीचै मत सत सूरजमुखी, जिका रै पेट में न पूरो अन्न, न फाटेसर पूर अर न पगा मे जूतिया। इसा ही घणाँ ही है जिका पेट री चिंता म, फुटपाथा री रेत बिलोवता खख खावै, झिडकीजता तडकीजता अपमान री घूटा पियै, अर इसा ही दीसै जिका पर आधी अर्थ-सुविधावा रो पाणी जरूरत सू ढुवै जादा कै। सरीर अर मन-प्राण सू टाबर-टाबर मैं एक है, पण दुख पावतै टाबरा रो दोस इत्तो ही है वा बिसमता री की नीची ढाळ पर जन्म ले लियो, अर दूसरा की ऊचाई री एक टोकी पर, पण विषमता री आ रचना आदमी रो रचना है, न प्रकृति री अर न परमात्मा री। आजादी रै बाद ऊचाई और ऊची हुई है अर नीचाई और गैरी। धन भेळो करण मे लाग्यो आदमी सेठ हुवै चावै सासक प्रसासक, लीडर-प्लीडर, नौकर चाकर कोई हुवै, भेळो कर'र अगलो कितोक करै, धाप री सीमा रेखा कठै ही हुवै तो लाधै। आदमी री वाबी मे वधतो ओ काळीन्दर धरती अर समाज खातर घातक है—धरती ईरी मजूरी को दैनी।

अभाव, सोसण, पीड, उपेक्षा अर आधी परम्परावा मे जूझता म्हारा थळी रा गाव (आयूणो-उतराधो राजस्थान) छपनै जिसै अकाळा रा

हाय पमारतो अपणायत रा
हेत बिखेर होळै सै बोली,
"न कदेई घर कानी आवो
अर न दीखो ही,
इया ईद रा चाद हुया
पाडोस आपणो किया निभसी ?"

मैं कैयो, "बोलो ?"
"बोलणो ओ ही है
कै सामली स्कूल मे
छनीम पूण पढै,
गधा-घोडा सै एकै मागे
काळियै बनै गोरियो बैठै
रग नही, अकल तो आवै,
आखो दिन रूळै टीगर
गवाड-गळी मे गोता खावै
कुवै भाग इसी पडी है
कै न टीगर पढै
अर न रोवणजोगा गुरू पढावै।
ईं खातर थानै
फोडा देख टाबरा नै
कोई बढिया ऊ ची-सी—
स्कूल खोज
भरती करवाणा पडसी।"
झाड आफरो, वा चुप हुगी
अर काढ जेव सू
चिट्ठी एक सामनै म्हारै करदी।
"लिखी विराट नगर सू
भाई मोती सेती

लिखमीचद रा राम-राम बचीजो।
अपरच समचार एक—
मुरली, मजु नै
आछी सू आछी
आपणै शहर री नाम-गरामी—
स्कूल मे भरती करा देया।
दौडधूप पूरी कर,
खरचै कानी मत देख्या।
टुकडौ सौ-दौयसै रो
कठै ही पडै नाखणो
तो थानै फुल-पावर
नाख दिया,
आपा समझस्या
पान खा, पीक मे थूक दिया,
जितै काम निकळै
सिद्धान्त नै एकर खूटी टाग देया।
कुता री कतार लम्बी है—
हाथ पोलो
तो जगत गोलो।
आवतो तो सरी
पण अबार री घडी
थे पुछया ही मत
की को सूझैनी
खावण पीवण री सुध ही
ऊँची टाँगदी।
सीजन इसी चालै,
कै राखनै हाथ घालू
तो सोनो निकळै।"

टावर थर्ड डिवीजन
पढणै मे पोचा,
आज सू नही
वरसा सू म्हारा
ठोक वजा'र,
जाच्या-परख्या
हुवो हुवावो
हजार-पाच सै वेसी-कमती
जे लागग्या
तो नख रो सो मैल
किसा खूणा खाली हुग्या ?
वात खुशी री आ,
कै दे उगतौ ही डोनेसन
हुग्या भरती वाल-भारती मे –
टावर लिखमीचद रा।

रोज वस मे आवै-जावै
अपटूडेट, चैरा चिलकै
मैडम एक घरै पढावै।
सर्दी, गर्मी री पौसाक अलग
खान-पान, रहन-सहन
रग-ढग, रीत-राग
रुतबो अलग
मौजा, हाफ्पैंट
बढिया जूता, वढिया वस्ता
कटोरदान मे मीठो
नमकीन, अचार-मुरब्बा।
ठाठ छोड दो,

कुण कवै वीन नै कोझो ?
साल मे एक वन-भोज
तळाव, तळाई, झील री मौज
स्कूल देखो रळी आवै,
वडता ही मैदान मुळकतो
नाचै आंख्या आगै ।
सामनै दूव री जाजमा,
दोखसी वा पर
तिसळनी तिसळता
झूलता झूला
कोड मे कूदता—
टावरा रा झूमखा ।
फुटवॉल, क्रिकेट, हॉकी
पीटी करावण
सीटी देवतो
दीखसी उस्ताद कोई ।
घरू खेल
लुड्डो, लैंडर, कैरम
का चालसी चैस री गोटी
मन वहलाव रा सौ साधन
शो सरक्स, एक्जीबीसन ।
साल मे फक्सन किताही
छब्बीस जनवरी, पन्द्रै अगस्त
गाधी-जयन्ती अर वाल-दिवस ।
वीचलै कमरै मे
च्यारा कानी वैच
काळजै मेज जची
वी पर चदामामा –
वाळक, वाळभारती
हिन्दी, अगरेजी

अर छोटी-मोटी और दूसरी
पत्र-पत्रिकावा री जेट पडी
अलमारचा मे पोथ्या
अैन सी आर टी,
सी० वी० टी०
भात-भात रो भरी पडी ।
हर कमरै मे
डैस्क, स्टूल, वेंत री कुर्स्या
रोसनदान, खिडक्या, काचरी अलमारचा
स्याम-पट्ट, चार्ट, चित्र, नक्सा
साइस-रूम मे
अपरटस एक-एक सू ऊपर
एक-एक सू मूघा ।
हर कमरै मे—हर गैलरी मे
'वाळक राष्ट्र री सान'
'वाळक महान्' रा अणगिण चितराम ।

वाळभारती छोडो
देखण नै ही टुरग्या
तो ईसू की आगै चालो ।
आ रेजीडैसियल पब्लिक स्कूल
हायर सैकिंडरी
ईरी मत पूछो
ईरा ठाठ छोडदो,
बठै ही खाणो पीणो
सोणो-उठणो, न्हाणो-धोणो
माईत सोवो सुख री नीद
वरसै बाळक पर सुविधा रो सोनो ।
फ्लस रा पाखाना

फिनाइल सू रोज धुपै
मजियै अर—
सगमरमर रै स्नानघरा मे
विद्यार्थी पर लाईफबॉय
अर लक्स रा झाग उठै
विनाका अर—
कोलगेटरी करामात सू
ऊपर ब्रु स
नीचै बत्तीसी मुळकै,
काच-कागसियो
केसा मे तेल सुगधी
अफगान-स्नो री
चिकणास लिया चैरा चमकै,
दूध, अडा, आमिस-निरामिस
स्पेसल डाईट
भावै ज्यू भोजन टैम पर
डाइनिंग-टेवल माथै।
छुरी, काटा, चम्मच
अर स्कूल मे ही
टैंक, बैंक, टीवी, ट्राजिस्टर
डाक्टरी जाच
नाई, धोवी, नौकर-चाकर
ठौड री ठौड सै
दुविधा नीचै सुविधा ऊपर।

बाळक धरती री अभिव्यक्ति
वी खातर जितो भी लागै
तो लागै
खुसी है पेट रै गाठ दे'र ही

पण, भीता पर लिख राख्यो
बाळक री मुस्कान—
सान देसरी
पण हाल ओ
कै वासू बापडी—
एवड री भेडा आछी ।

हैडमास्टर रो दफ्तर सज सकै
दिन मे ही हरी पीळी
टयूब-लाईट जग सकै
मेज पर कागजी फूल
रग-बिरगा पेपरवेट
चिक, पड़दा
बिजळी री घटी,
छोरा रा चैरा पडै पीलरा
पण दफ्तर री भडकी जबरी,
पढाई ठण-ठण गोपाळ
कार कढावो राम-राम री ।
इन्सपैक्टर रै स्वागत मे
लाग सकै लढीड—
सौ पचास रो
अै किसै बिल सू निकळै
आ मत पूछो ।
बुझै काळजो,
बेबस बाळक री कीनै दोरी
बजावै रामसा पीर
आधै रो तदूरो ।
हा तो केई दफै,
कवाइ ड-क्लास मे पग धरता

मास्टर रो सास चढै
बडता ही
मेज पर वो डडो पटकै
फेर हुवै घोषणा,
"खबर दार—कोई बोलग्यो
तो टेर देस्यू
कर टागा ऊ ची माथो नीचा।"
आ रोज री गीदड भभकी
वृसी कड्ढी, वासी रोटी
छिण भर चुप्पी एकर
फेर वाही कागारोळ—
कीरतन सागी।

गुरु उठै
वर्फ ऊफणै,
ताती हुवै ठडाई
धमकै बाजै बीनै दे दडादड
पुरसीजै अणतोल मिठाई।
अब मौळी बाध रीस रै
लघुसका पर विदा हुवै
पाछो आ पाणी पर बैठै
कुरळा, एक सौ आठ करै
आलै मूढै मास्टरजी खिसकन्धा,
घटो इत्तै पूरी हुवै।

बाळक दिन भर इया
बणतो कुक्ड -कू—
कूटीजै, पीचीजै,

मावळ गोनो,
ज्ञान-रमाई
पल्लै कीरै किलीक पड़ै ?

स्कूल में
पाणी री कूंडी जूनी
अहिंसा परमो-धर्म रा
नाडेगर बेटा
गांधी री पैर लगोटी
पिवै अणछाण्यो पाणी ।
कुण छाणै कुण पावै
कीरी घोटी कुण नीरै ?
होठा नीचै जरदो
दराग आगै सेगी मँनो
छैल-फटर पसरागो बैठो ।
चाय उकाळै
दोपारै स्टोव जगावै
छोरा,
पाणी आधो पिवै आधो ढोळै,
मस मास्या, माटर
पाणी पर भूणा म्याळ तिरै
आगे दिन अणगोधा लाय
कूंडी में मैल गिणोळै
बिना गीणी छोरा
पाणी ने ढुलाई करै ।

'मच्छर-जहा जहा
मलेरिया वहा-वहा
आता-जाता बाळक बाचै
मास्टर पढै
पण 'क्या रा वेंगण'
वै आंख सू पी कान सू काढै।

डाक्टरी जांच अठै
कोई अकाळ मौत मरग्यो
तो बात जुदी
नही तो पीळी पडती
सम्भव री वेल सूकगी।
अै स्कूला,
सहरी अचळ मे सगळै
जठै लड्ढा-कूटो
दिनभर खट-खट, खटै खटै
मोचा निकळै झाळा लागै
वोदा टूटै नुवा घडीजै
है हो, है हो पडै हथौडा
घण बाजै
सौदागर करै मलार
लकडा फाटै टैण कूटीजै।
वस-ट्रका रा हार्न
कारा री पू-पू
टैपू री घर घर घू
घोडा री टप् टप् टाप
गळा फाडता भोपू
रीछ नचावै बाजीगर
छेडछाड खिलवाड कठै ही

भाग गेळा करती भीड़
निवळे पठै ही सूती अर्धी ।

ई पाड़े में, एकमजली
प्राइमरी एक स्कूल जूनी
एक दफ्तर, एक कमरो
दो टंणा ग छप्पर ग्रानी
गुणा, आजादी सू पैला
हुती अठै कदेई
पुलिस री चौकी ।
अबळै
ईंट रो गच्छ उनाळै
टाबर पाटी बम
डील नै जादा पूछै,
सियाळै उकडू बैठ
गोडा छाती में राखै
बिरखा में बौछाड़ पड़ै
आधा सूकै, आधा भीगै
भोळै छोरा नै गुण समझावै,
उपासरै में कागसिया सोधै ?

हैडमास्टर उस्ताद
ढाई आखर पूरा जाणै
कै राज री पॉलिसी काई,
अर रिजल्ट किया वणै ?
स्टैंडर्ड घटै
पण छोरा सालोसाल वधै

आ डबल-सिफ्ट पौसाळ चलै ।
दिन-दिन हुवै तरक्की

इया ही
सिनेमा घरा रै लारै-आगै
आसै-पासै
प्राइमरी स्कूला लागै
आता-जाता
छुट्टी-छपाटी
गैलरी मे वडै नीसरै
पढै आक
चौखटा रा चैरा देखै
'हीर राझा', लैला मजनू'
'रात पेरिस री'
चुवन-आलिंगन
देखै वाचै सगळा हो ।
जड हाव भाव, वण सजीव
आंख्यां रै रस्तै
आज नही तो काल
उतरै चेतन रै चैरै ।

टाकीज रै आगै
गोल्ड-स्पॉट
कडकती चाय
बीडी देसाई
पान रसीजता
अर उडै पूनमे—सिगरेटी छल्ला ।
जीभ चटोरी
पापड, पिचका, चाट चरै

रह-रह वो घावा पर लागै ।
सुण-सुण लूखी लोरी
धीरज रै प्राणा नै
कदताई राखै कोई ?
तो, कोढ पाळती आ गळियां सू
बेवस बाळक कडै किया
आ कुण सोचै ?
दरबारी-राग जोर पर
हाथां मे ममता री पूछ
आधी घोडी बिल मे भागै ।
जठै कूड साच सू मूधो
पडी फ्रिज रै नीचै
दारू री रगीन बोतलां
पडै दही मे खब,
दूध मे माछर माख्यां ।
पण पूत उजास रा,
उडीकसी कितोक दिन
आंसुवां नै पूछता ?
बाळक किता ही
पेट री चिंता मे
ठेसण, धर्मसाळ
पार्क, सडक, सिनेमा
उडै भूर
फिरै गोथळी लटकाअा
काढ लिलडी,
अर्ज करै आदमी नै
"बाबूजी पालिस
बूट इसा चमकास्यू
याद राखस्यो केई दिन
तबियत खुस कर देस्यू,
कम दाम, बढिया काम
भूखो हू, बोवणी री टैम

खाली एक चवन्नी लेस्यू।"
वेद वण्योडो वाबूजी
छोरे री कमजोरी जाणे
सुणी-अणसुणी कर,
नाक री डांडी पकडे
अर भूखो छोरो
लियाँ गोथळी
पाडे रा पग गिणतो
वावू रे लार टुरे,
छेकड पावसे पाडो
अर रो पीट
पइसा देवे वीस—
री-री करतो।
फूल हुवे उदास
पण कादे मे डूब्या,
खख पीवता
चभके फीडा खल्ला।
खा सिझ्या
चिणा, चाट, पकौडी
वस पडताँ सिगरेट
नही तो वीडी
धर्मसाळ री चौकी पर
का सडक किनारे रात काट दी।
कदेई हुई कमाई
अर वचग्या रिपियो-आठाना की
तो पिक्चर देखली—
नव सू बारे री,
अर भरली रोगल पाणी सू
वोतल चेतना री
दिनूगे पाछी आख मसळ,
वावूजी पालिस
फिरणो सागी फुटपाथाँ पर।
केई टावर पढ़णजोग

वै दाळ रै पाणी सागै
टैम टाळ,
दो जूण बासी रोटी ।

छोटा बाळक
फिर फिर लेवै
वोदा कागद
पूर, पुराणो लोह
चपला रा तळिया
पात गळचोडो
पीपा रा छीतळिया
काया नै भाडो देवण
का चुगै काच रा टुकडा
करै घणो ही
आ सगळा रो जी
कै वै ही मिनख वणै—
की लिखै पढै
पण मोटो रोळो एक
पेट रै लागै गाठ किया ही
जणा पढीजै ?
अर व्यवस्था री बेमाता
तकडी अैडी क्दरी
कै पढाई,
अर मिनखाचारै पेट भराई
फुटपाथी बाळक रै करमा म
सागै लिखती ?
पण सुणी सविधान रै मूढै
कै जनतत्र री सडक साव सीधी'
ता बाळक अर बाळक रै वीच
खडी हुवै क्यो भीत
लागै क्यो—बीमारी गतिरोधक री ?
कुर्सी पर नाया री जनेत

सै ठाकर
कीनै पूछा,
कुण दे उत्तर ?

चाळीस पचास घरा री
आ बस्ती छोटी सी
म्हारै गाद री
ईं मे कच्ची साळा
सरकी छान-छपरिया
का डोका दिया झूपडा
अठै घणखरा
लाईबाई करता, बसै बापडा।
बस्ती रै एक किनारै
स्कूली पडवो एक खडो
ईं मे कदे कणास विराजै
मास्टर एक
नुईं रोसनी रो नुवो फिडकलो।
ट्राजिस्टर एक बगल मे
फिल्मी धुन होठा पर
खुद मे खोयो
'माया', 'सरिता' मे डूबै निकळै
कुर्सी पर बैठो ।
न चाक न सूझतो बोर्ड
सुणी है—
दपतर सू मिलै चाक रा डिब्बा केई
पण मास्टर पूरो फडदी
कर तियो-पाचो
पूरी करदै चाक सहर मे
बिना घस्या ही ।
बदळै म,
सनलाईट री बट्टी
ब्लेड, रेजर, सिगरेट री डब्बी

का टोटा बीड्या रा चुगता
लाधै गारवै
गधां रा कान मरोडै ।
सूरजमुखी केई
सोसण अभाव—
काळां सू कूटीज्या
अणहूत भाठै सू काठी
पूगै वडी हवेल्यां दिस भूल्या
दांत दूधिया, पढणै रा दिन
पण रोटी कपडै सट्टै
गछ पूछै भाडा रगडै
पोतडियां धोवै दिन तोडै ।
केई पच, सरपच बण
गांव रो भार सांभै
बीडया रै बडळ सू ले
बोतल मे विकता
वोट रो हथियार चोर नै सूपै
जुग हसै
जडता पर बैठो,
जनतत्र क्रियां निभै ?
भारत गांवा मे बसै
अर गांव बैठ
वाळकां री चेतना मे
अज्ञान री अर्थी उठायां
विसमता रै पाट नीचै
आए दिन नीचै धसै ।
न बहस बी कनै
न जोर जबरदस्ती
न धमकी न चालाकी
देवो तो हाथ मांडदै
झिडको, थप्पड उबाको
तो होठ ढीला छोड

अ।पू बेश्पा मे काढदं]।
भावना रो भूतियो
सरळ इत्तो
कँ रेत रं रमतियै सू ही
फूल वीरो खिल उठै अमूजतो ।

जद जाम जायै नै
एक सा पाणी हवा
जाड-जीभ, जीवण-गाठ एकसी
तो हर बाळक नै प्रतिभा जगावण
एक सो मौको मिलै
मनस्या धरा री ।
एक आँख मीच—
वैभवी कुरळा करै
सुलभ एक नै मूधी चिकित्सा
एक नै कुनैण रो पाणी अलभ
सूनै आकाश नीचै सास तोडै
भोग जीवण व्यापी अधता ।
विद्या प्रसार खातर
खडी हुवै
कमेटी पर कमेटी
पण टीए डीए रा होठ खोले
बूटा बजट रा चरती
सिक्षाविद बूढी टीडी
न्याव नै अडीको बैठा
कद पार घालै बानरै री ताकडी ।

कुत्ता पढै
चढै मोटराँ मे
ट्रेंड हुवै बानरा
रेस, फीचर, फाटका
येराँ रा सौदा करै

देसी कुण वता वो ?"
"नही मा, आसा म्हे वेगा हो। जासू बाई सागै/बरजै मती।"
समझाया/पण, चढग्या जिद दोनू ही/तो, कह दियो मा उथपी/"धावो मत कान/जाया दिनूगै। मीचो आख्या/अवार तो दो घडी/पड्‌. हू ही/बुळै हाड/थक्योडी दिन री।"
"चानस्या सिवला, " लैर, एक खुसी री,/फैल होठा पर सुगनी रै/चेतना मे वीरी/रमगी सीधी।
"चालस्यू बाई"/अर, डूब्यो प्यार मे सिवलो/चिप्यो मा रै इसो,/जाणै वरसा सू/मिल्यो अवार ही वो। चढघो कोड रै घोडै/छोड सरीर ढीलो,/कूदा नीद री नदी मे/हुयो नचीतो।
फोर पसवाडो वो कानी/हाथ आपरो, धर दियो मा/ लिलाड पर हळको-हळको/आगळचा वीरी/सिवलै रै लिलाड पर/फिरती पोलो-पोलो/आ'र, आख्या कनै/ रुकी जिया ही,/ममता री माटी वीरी,/पी एकान्त रो पाणो,/हुगी दिन सू/गीली अवार घणी/अर डूबगी वा/ च्यार छव घटा पैला घटी/घटना री एक नाडी मे गैरी।
वात आ ही/कै, वैठो बजरो री ढिगली पर सिवलो,/ कर तो लीक-लीकोळिया/धुन मे आपरी खेलै हो/ सेठ, आवतै ही/न पूछयो न ताछयो/कैयो, "छोरा, खिडावै वजरी/चेतो है क नी ? लाग्योडी को है नी/ बोरटी अठै पइसा री ? आवै पसीनो/हुवै कमाई दोरी।" अर, धरदी औळथ री अचाणचको। चमक्यो छोरो/हुग्यो दोलडो/चिपग्यो गूघा'र म्हारै डरतो/अर, बसवसीज्यो/दो घडो एक सो,/समझायो मैं/बोलो रह बेटा/पण, न रुक्यो बसबसीजतो/अर, न बुझ्यो सुलगतो/ धुखतो गयो/
म्हारै ख्याल सू/बारै वीरै कम/धार अपमान री/मायलै

पासै/वैठगी ऊडी/सकती-सकती/सेठ नै हू कह वैठी/
कै, वाळक हो, सेठा,/कैवता मनै/तो, हू बी वेळा ही/
तडकती/अर, करती/पक्‍ड वावडी परियाँ ।
बोल्यो सेठ/"सुक्खी, डरायो हो थोडो,/कूटू/हूँ किसो
अज्ञानो/किसो गूगो ? भीड/टावर री नहीं चढणी/
चढयाँ विगडै बो । ओळभो आज बजरी रो,/तो ढोळदै
काल/घडो बो घी रो। सोच तू ही/हुसी मुश्किल पछै
कीरै ? घाल्याँ डर/रैसी चेतो आइदै,/तो, सुधरसी वो/
करसी कमाई थारै/का, म्हारै ?"
भरदी साखी/कनै ऊभै कारीगर ही,/कै, "सेठाँ, करी
थे/बिल्कुल खरी । हिसाब सू म्हारै/चेपणी ही गुद्दी मे/
एक और जोर री ।"
भैस,भैस गी सग्गी/ कैवती भीत नै/तो आछो,/लगा
होठाँ रै ताळो/ऊच तगारी चुपचाप/लागगी ढोवण नै
माटी/छोड छोरै नै रोवतो । 'कर फुरती'/चुभी कानाँ
मे/चढती आभै/उतरती धरती,/बेटी/आदमी री कठै ?
हवाईज्याज ही/कसर एक ही/को वगसीनी पाँख्याँ
रामजी / सुणै कुण/गरीव री जूण ही इसी ।
पण, हुग्या पइसा/तो, हुयो काँई ? है कित्तो सूनो ओ ?
को सोचैनी आ/कै, म्हारै गया पछै/समक रात/कुत्ता ई
वजरी पर/खेलै छछी/खिडावै पगाँ सू,/अर विगाडै ईनै
बीठाँ सू/करू/हू वजरी भेळी,/अर, उठाऊ/बीठ कुत्ताँ
री न्यारी/पण, करली सेठ/कुत्ताँ पर कारवाई किसी ?
ई भोळी कूपळ पर/हु लाल-पीळो/चला दियो
कुहाडो/नावडै/कुभार कद कुभारी नै/कान गधै
रा खीचै/हुवै मिनख तो समझावै कोई/है आदेस
लिछमी नै/मिलगी जूण मिनख री तो काँई/पूछै/कुण
ईनै ?
वरस, दो ढाई पैलाँ/ओ ही सेठ/करतो/तेला लूणी/
घीसतो खल्ला/फिरतो तगादै/छमकतो कीडा/
वतळावतो/च्यार दफै कीनै ही,/खोलतो जद/एक दफै/
होठ निठ कोई/है अचम्भो/आ थोडै सै दिनाँ मे/जाणै

सपना/हुई न्याल/रैया टिक्या हाथ वीरा/म्हारी पीठ पर/मिट पाँच ताई एकसा/अर, रैया ढुळता/होठ वीरा/मोती आसीस रा/

रैया दौडता हाथ म्हारा/वीरी ठूठिया पीड्या पर/, पीड वीरी/लुक्योडी चुगण खातर/हू घोडी/सवार, आसीस मै पर।

बोली बा,/वहू, डील मे अव/न करार किरका/न आख कान सागी,/दिन इत्ता/अडीकै ही हू/खाली तनै ही,/आयगी तू/तो, साभ घर/ पूगगी हू सरग जीवती ही/उठै हो दम/ निभी बा/साल डोढ ही/लियो पकड वण ही गैलो/सुसरैआळो एकदम सागी/पण, जियै हेत वीरो/म्हारी चेतना मे आज ही/ही साचेती बा/हेत जीवतै री/मूर्ति मुळकती/

एक दिन/कैयो वण, बेटै नै/ 'हरखा, लुगाई/मैके चमकै लुकोई ही / आ है आरसी गवाडी री/ई खातर/न पडै ई पर/रूळेट दीठ हिडकिया री/उतरग्यो/पाणी जे वारलै पासै/तो, लागग्यो काट/समझलै, निकळक चादन/सात-पीढी रै/ करै/कैयो म्हारो/तो, दिए रैण कमठाणो/पाणी, पीसणो/काम घर मे ही घणो / करसी रामजी, /हुसी बरकत/ इत्तै मे ही मोक्ळो।'

वात मा री/वाधली वेटै,/करली कळेजै।

डोकरी री छाया तळै/सारचा टीको काजळ,/धोक्या तीज तिंवार/किया आसरा एकत/अर, ओढचा राता पीळा/फाटेसर/एकली वहू/ईडो इचरज री/लचको लाड री/अंढैसर/लापसी अर पीडिया चूरमै रा,/लि ले डिकारा खूब खाया / फूस री झूपडी मे ही/ली मौज मन री,/ खटी खूब/खूब स्सोरी/पण, आगै/पडै किसी ठा,/खा कुत्ता खीर/हुसी आ।

गया बै/एकदिन कमठाणै/ऊचो अडाण/देवै मजूर थापी,/टूटगी मचली/तिमजली हवेली/पडता ही/मुडो नस,/उडचो हस/लागी अधघडी ही/पकडलो वण ही/दिस मा बाप री।

म्हारै दिन दो/दियो लुगाया पौरो/दौडती हू निकळ-

निकळ/खुली आख्यां की/तीजै दिन/देख्या जद/छोरै छोरी नै/बिलखा वेमन/ वौली/एक भुवा वूढी/सुक्खी, दीसै/जा सी/थारै सू पैला अ टावर,/पण, मोडयो मू तै डर'·/अर मरी ज णर,/तो, मरसी अ/अर भरसी तू/ डड पापा रो/जलम जलम भर।
करलियो/जी नै थिर/लागगी कमठाणै एकदिन/ऊचली तगारी,/चलै बा ओजू/निभै बाळक/देख देख वानै/धिकू हू ही कियां ही/
हुई अघेडबुण पूरी एकर/अर, लागगी आँख्या वीरी/ घड़ी भर।

२

सूरज री उगाळी/टुरी खोखा नै/जोडी वैन-भाई री/ कंवतो सिवलो/ देख बाई/चुग ईरा/अ मीठा,/मत चुग बीरा/बाडा/फीका वै थूकसा/चुगता/चाखता,/निकळग्या दोनू/गाव सू, कोस डोढ अळगा।
वजगी इग्यारै/वरसै लाय/खीरा पून मे उछळै। "बाई, लागगी तिस/पी सू पाणी/होठ सूकै।"
'अरे, आयग्यो/सिर पर सूरज/करदियो मौडो, / लडसी मा/देसी ओळभो /' चमकी सुगनी/सभळी,/करी याद घर री / सिर पर कूडो/खौडावै न्यारी / चीरजगी चामडी घाव री/चुवै लोही।
"चाल सिवा',/अर, टुरी जिया ही,। सुणीज्यो फेर/ 'बाई पाणी।' हुई अणमणी और सुगनी/
चेप तेड पर/धूड वळती/टुरी विचारी,। पण,चालता ही की / फाटगी तेड पाछी/'कर फुरती सिवला,'/पण सुणीज्यो/'मरू तिस/करा कठ आला'/चेपी रेत/करता ही सिर सुवो/दिया पग रोप सिवलै/दियो/फाड वाको/ सूकै होठ बुद रा/उठी चिता/कापी/वैठगी चेतना/ बठै ही

भोजग्यो की ओढणियों।
'सिवला, उघाड आख्या/मा हूँ थारी। पण, सिव/पी विसमता रो विस/छोड दी धरती/ली समाधि लम्बी/ कफण नीचै/लास ऊपर। छोड सब/हुग्यो सिव विसधर/ 'सिवलाऽ···ऽ' उठी चीख/सुक्खी अचेत/पडगी धरती पर। अध घडी बाद ही/देखली एवाडियै एक/'अरे, आ तो सुक्खी ! दीसै जियै, बेहोस'/घलवा गाडै/पूगती, घरे कर-दी/अर दिराई टावरा नै माटी / कियो सुक्खी चेतो/ तो, दीख्यो झूपडो आपरो।

फाडती वाको/कूकती एका ही/ सूजगी आख्या/हुगी राती/स चलियो, एक दिन वण/कूकू कितीक/कूकी भिसी थोडी/आया/न सामु/न धणी/तो, कठै सिवनो/कठै सुगनी ? "जूझणो धर्म है/जरूरी है जीऊं जितै"/उदास-उदास/लागगी वा काम मे/एक दिन आपरै मतै।
पण, पकडै कुण/जीभ गाँव री ? मरचा है तिस्सा मरता/हुसी भूत/भटकसी रोही / टैम बेटैम/डरसी आवता-जावता/करसी नाम/देही मिनख री कदेई। कैवता केई/मरचा बापडा निर्जळा नै/पूग्या परमधाम/ मिलै दिन इसो/कोई सै नै/सुणती सुक्खी/आ दात-रगड रोज री/पण,को समझीनी वा/किनारो ईरो, किसो साचो/किसो कूडो ?
उठती लालसा टावरा री/रोज वा सोचती / एकान्त मे आख्याँ वीरी/कदे कणास भीगती ही/करता नही-नही, वधती पीड ही / औदरगी वा/पडगी आधी/पण, एक दिन/ई धरती पर ही/लाधग्यो बीनै/रस्तो एक इसो/ पूगतो बो/सिव-सुगनी कनै/छोटो/रसोरो अर सीधो। फेर न वा/रोई कदेई,/न नाखी निसास/जीई जितै/रही राजी/लूटी मौज अर मस्ती/लेयगी आसीस धरती री। खेजडी है एक बूढी, जर्जर/अगूणै पासै गाँव रै / एक दसक पैला/लागती जेठ वैसाख पौ बी नीचै/तणती हरसाल सरकी/टूटी, बोदी/रूपता माटा/ठरती मटकी। वा और कोई नही/ही मजूरणी सुक्खी/लागता रोज/

घडा सात-आठ/ढोवती खुदरै सिर पर,/बैठती दम वजो/ जावती सूरज छिपै आपरै घर/पछलै बरसा मे/हुगी कमर बीरी आटी/आख्या राखिया कोडी । पण, चिलकै ही साफ/दीठ वीरै मन री ।
पूछलियो मैं, एकदिन वीनै/ दादी, देखै क्यो/फोडा इत्ता, ई ऊमर मे ? बोलती कम/करती जादा / खुलग्या होठ बीरा/म्हारै खातर/म्हारै भाग रा/बोली, "बेटा, बचिया दो, भूत रा/रमता कदेई/हँसता मुळकता/ई घर रै काळजै मे/कर कोड/छोड घर एक दिन/वडग्या, रोही विचरतै तिस्सै टाबरा मे / वीतग्या जुग/पण विचरै वै ओजू वा मे/वैसाख जेठ दो महीना/वाजै वळती/सूकै होठ वारा/चावै वै ठडो, ताजो पाणी/पाऊँ हूँ घपा घपा/मुळकै वै/हुवै राजी । मिलै मनै/अणमागी मस्ती इत्ती/तू पूछ मती / समझू हूँ/का, समझै ठाकुरजी/न करू पुन/न पाऊँ याद मे वीरो ही,/काढू रळी/धाप-धाप/म्हारै मन री ।"
म्हारै आगै खोली वण/पडी गाठडी कदरी/बँटगी पूजी/ हुई नचीती/चरावता रोही मे भड वकरचा/टाबर गरीबा रा / लावता चुग-चुग छाणा लकडचा/खोखा सागरचा/देखती सगळा म वा/सिवलो, मुगनी/हुता तिस्सा वै,/मार मार हेला/पावती पाणी वानै/हुती राजी अनोखी/देख जूझता नै ई ऊमर मे/
मुणी, वाईसवी निर्जळा नै/वजी ही च्यार नैडी/वेटी धरती री/लिया लोटो/बुला-वुला वाळका नै/पळूसै ही सिर/पावै ही पाणी ठडो/हा वाळक राजी/खुसी वीरी/ चढी, चोटी मधुमती री ।
पा, पाणी/हुई निरवाळी वा जिया ही/आयो/उदास एक झोको इसो,/कै उडग्यो/मातो मोटो/फुर्र करतो सूवटो,/ अर, छोडग्यो पीजरो/वोदो/निकामो/अधटूटो/बैठ/ बठली वोदी गळी सरकी पर/कियो याद मे कीरतन/ चिडकल्या केई दिन/बा खातर/लगाया सपना बण हरचा/आपरी मटवधा सू/जीवतै दिरख्ता रा,/अर वण चिडकली वा/रमी सैस सैस चिडकल्या मे/वण विश्व

चेतना/सुणावै मानखै नै आज ही/गीत श्रम रा।
ई एक दसक री/लम्बी थोथ पर/बापरी गाँव मे मोटरा/झुकी हेल्या/कराई सतचडी तस्करा,/हुई उछाळा/हुया गाँव ओसर/चुनाव जीत्या/निकळी बाजती बैंकूटाचा/माडी हीड पाखड/झूलै, जाळी-फरेबी दडाछट/पण समेटया/चेतना निर्जळा री लम्बी/अडीकै खेजडी बूढी/लैण रोही फिरतै बाळका री/सुक्खो सी दातार/श्रम-पुजारण चेतना आज ही।
नदी वा दुमासी/छोड धरती,/वडगी बाळकी चेतना मे जीवती/वण मोटचार चेतना वा/जूझसी/ज्यू-ज्यू विसमता सू/उठण गरीबी सू/चलासी दातियो-कसियो/साभसी मोरचो अध लडयो,/तो, फैलसी/पाट वी नदी रा दूर ताईं/हुसी पाणी खूब गैरो उछळतो/अर, बहसी/उफणती वी धार मे/ कूटळो घरा रो रोगलो समूचो/
टुरै कोई/तो, छोडगी सुक्खी/ पगलिया समै री रेत पर/फोरै न दिस/माडगी ई खातर/तमस धोरा मे चमकती डगर।

एक तीखी याद

केई साला सू वो
धीरास गयो
अनासुरति नही
जाणो पड्यो,
मोटयार जवान
वीरो मासो मरग्यो,
रोग सू नही
रासन री जवार खा'र,
जवार धर्म री नही
ली ही वण डीपू सू
घटै भर
क्यू मे खडै हु'र।
मूगियाई जवार
पोची अर बरसा री बोदी
मुणी, वी मे हा धतूरै रा बीज
अर डी डी टी।

कीरी घोडी कुण नीरै
कठै टैम
समझावै, कुण कीनै ही ?
'कै ईनै घोवो, फटको

बीज धतूरै रा चुगो'
ली,
अर घट्टी सू काढ
कर काची-पाकी—
पेट में नाखली।
टैंम कठै
फैमिन वर्क चलै।
ओ मोटो पोचो धान
गांवा खातर
वै पचै, पसीनो नाखै
पण जूनै जुग री कैंवा
कै सहर वसै सो मानवी
गावा रा ढोर गिणीजै।
धूड ढोवै वै
अळमू पळसू
दावै ज्यूं ही खासकै।

हां तो होळै-होळै
बींरी आता कटगी
सिर घूम्यो
हुयो जोदोरो
खून रा दस्त
ताळवो सूक्यो
वधती गई पीड
मूगो पाणी की
उल्टी में निकळ्यो
होठ बन्द
मथीजती चेतना गुमसुम
याद कीरी ही पूरी
पण हिचकी उठी वा
आधी अर अधूरी
आख तेडदी

लियो अगलो घर।
वीनै हो विस्वास सभळजास्यू
इँ राजमे वण
मिलावटी घी' तेल
अर आटो खोटो खा-खा
पैला भी भोग लिया
केई 'चास' इसा।
जावतो जे धणी रै हाथा मे
तो बजती भागण
लाख री ही।
पण ओजू,
चाचवा आफता रा
वैठ समै रै लेवडाँ पर
लेणा बाकी
वचगी इँ खातर ही।
सोच्यो की हो
पण जेवडी जीवण री
लम्बी निकळगी।

हाँ, तो वो मरचो कठै
वी गरीव री तो
अकाळ मौत—हत्या हुगी।
रोग सू मरतो
तो धोखो को होनो
देसरी काकड पर
अरपता प्राण हसता
दम तोडतो जे
खेत री रेत पर जूझतो श्रम सू
अधघडी हो जे
वगतो हाथ पौरमी कठै ही
लूटीजती लाज रा
तो मौत कठै ?
वरसता लास री धरती पर फूल

"सेम, सेम, कूडी
पगा चालता नाखै कूडा"
हुई गुटरगू और जोर री,
'वॉईस' हुई 'वॉक आउट'
पण टुकड़ै री पूछा ताळी पीटी
स्वाभिमान रो नाक छोल ।
अरे हूँ भूलग्यो
गाडी लैंण उतरगी
वात,
कीनै री ले टुरचो ।
बात तो ही वो गाँव गयो
हाँ तो वो देखै हो
उदास खख मे डूब्यै
गाँव रो चैंरो ।
समृचै गाँव रो चितराम लेवण
हुयो बारै ही खडो
एक ठिरडै पर ।
अर आपरै चलतै फिरतै
ज्याज मे फिट हुयोडा
दिया खोल
नैण रा दो कैमरा सीपिया
तो
खिच्या चेतना री रील पर
'धूड जम्योडी मूगी नाडा
डील पर पसेव रा रीगा
सिकती धरतो
पगा उवाणा
होठा पर फेफी
आख्या मे चिंता
काळजै सुगध समेटचा
सिर्क भोभर मे,
छोटा-छोटा—

फूल गुलाब रा।
काटा सू बिंधे पगथळथा
चुगे रह-रह कीकर री फळया
खावे बात करे—
"देख रामला
मैं इत्ती चुगली,"
कमला पर राख-राख
थारी तोल करै
पण आंख मीची,
पर-पसीने पर पळी
बहरी हाटा कनै कठै कसौटी
कै वै फळया पर पळतै
जीवित सोनै रो मोल करै।
कुर्स्यां री छत नीचे
चालू चमगादड
अबसर री रात अडोकै।

"हाडी वेळा हुई हेमला"
"साची रे?"
सूरज छिपै
लागै करट काळजै
ले पून पगा मे
हाथा मे लिया फळी
उडै
फूल गुलाब रा जळदी-जळदी।
रळा राती जवार मे
पीससी मा
की लूख की लाणो
की बीज बोदा।
जद ताई सासा
जूजणो पडसी
करणा पडसी, कळाप सै ही

झडै फूल कोई
तो होठा पर धूजती
चोख री रोगी चिडकली—
बीमार मा री
उड खाट रै आकास मे दो पावडा
पाछी पडै
बण पखनोची पागळी ।
बिडकै जवान माख कोई
तो उठै होळी
मचै कुरळाटो,
पण वीनै कुण ब्रधण दै
की आधी री सासा पियै
पियै की खख,
की पडतो अधेरो,
आ हाला, कुण सोच करै,
झरतै पीळै पत्ता रो ?

सरकार नै चिंता घणी
गाव मे कीडा बधै
ईं खातर
लिया बाल्टी, पप नळकी
छोरिया दो च्यार
छिडकता डी डी टी फिरै ।
ठौड ठौड, भीता सू उतरचा
उडै बोदा पत्ता
परिवार नियोजन रा,
अगलै महीनै
आ पत्ता री जाग्या
चिपसी नुवा,
ग्राम सेवक,
पटवारी, सरपच
वण जनसेवी

परसटेज पकावण
घर-घर जासी
सरकारी सैकरीन लिया।
गळचँ कातरा काळ रमैं
उदास डगळिया
लड लड आधी पाळै सू
रळै रेत मे झडै मतै,
मेह अर मौको
कद-कद आवै
काळ नै केई जमानो समझै
ई खातर,
सामली सूनी धरती पर
एक नवहेली री नीद उठै
अफसरी बगला मे
ब्याह रचीजै
टी वी, फ्रिज, फिएट
नुवा वापरै।

सिझ्या पडै
धीरास री गोदी मे
उतरै जळदी-जळदी
रात डोकरी।
पी किरासीण आधो
चिमन्या जगै बुझै झप-झप करै
डोकरी नै मोतियाबिंद-
पाट मिलग्यो,
चानणो आखडै पडै।
पीचीजतो काळ रै पजा,
हर गाव धीरास बणग्यो
जठै रुळै मासी,
मरै मासो।
पण कुण कीरा आसू पूछै
कुण मौकाण करावै

एक लम्बी सिसकार सागे
सास छोडतै वण
खोली जीभ उत्तर देवण।
'भुवा, सोचू अतीत नै
तो डरू कापू
भविष्य अन्धकार मे
दुखी हू वर्तमान सू।"
"क्यो ?"
"भुवा, नैम है ओ सिस्टी रो
कै धन रै रूखाळै चैरै पर
सीड हसी रा होठ
लिखै विधाता चिंता ही,
तू ही वता
अमावसी आकास मे
रमै कद, किरण चाद री ?
धन नै हू किसो खाऊ
चाटू का डील चोपडू गैली
गिटलू जे,
घणा नही, नग दो-च्यार ही
तो वता,
पूगता अगलै घर मनै
लागै ताळ किती ?
अर ले मिण कोई
जा हाटबाट की ला सकू
कद बगसी मनै
खिमता इसी रामजी
न की भूखै तिस्सै नै दे सकू
न दुख सुख—
पूछ सकू की बदै नै ही
दिन तोडू आधी वम्बी मे
जड वेगारी मे
अणचीती मौत मरू।"

गोह् बोली,
"तो क्यो बैठो
गुळगुचिया पर दिया हियो
कूडो पपाळ, छोड बाळ
खाली खोटा भुगतै
बम्बी रै महा अन्धकार मे
बिना लाभ—
जीवण अणमोलो
जड पर क्यो बुझै गळै ?

वासक बोल्यो,
"मिनखा जूणी मिली कदेई
जद सू वधगी आ बीमारी
पण हू सोचू
प्राण ले'र ही वा लार छोडदै
तो ही हू राजी हू ।"
गोह् अणसमझीसी
फाडती आख असमजस मे
मिणधर सामो देखै हो ।
मिणधर तत्काळ समझली
दुविधा गोह् री
बोल्यो, 'पाटडा सुण
हू हो सेठ एक महाकृपण !
पकडी समझ जद सू
पइसो दात सू पकडचो
सोनो जवाहिरात—
मिल्या जिया ही
वूरतो गयो
चीर पेट धरती रो ।
न लगायो कठै ही
न लगावण री जी मे ही
पाळी काळजै दिन-रात

पण समाधान सामो पड्यो
कै झूपड्या री चेतना सू
उठै,
आधी एक जनवादी
वा पाटदै विषमता
अर वाटदै हर आदमी नै
प्राण दाई आस्था री
ऊजळी आधार भूमि एकसी
पृष्ठ खोलदै इतिहास
वद हुवै काळी-कथा जद कठै ही ।"

गोधा सोच्यो,
'जद ही मजो है,
जद मिणधर री आ स्मृति उपलब्धि
धरा रै मगळ खातर
मडै मुळकती
आदमी री चेतना पर
भाग्य अ क सी ।

क्यों धरा अमूजे !

अकल मे बोलीचाली मे
सेवा-सिल्प, ज्ञान-विज्ञान मे
आदमी रचना कुदरत री
सगळा सू उत्तम
सगळा सू आछो
लागै धरती वीसू
ओपती, अर्थवती।
पण आदमी नै देख
आदमी री आंख मे
जद रावाडिया रडकै
ईसकै री लाय मे वो
बिना धुवे धुखै,
बाध,
डोळा रै मजवी पाटी
गांव अर सहर
लूटलै, बाळदै,
मानखो उजाडदै।

पण, चूघता बाळक
किसो ईसको जाणै ?
किसो मजव पिछाणै ?

आदमी री खुसहाली सू काई
बजार चाईजै—
वींनै तो धरती पर।
की दे, ले'र ही
राखणो चावै वो
तणाव तरारो सीतजुद्ध
वैठ भीत पराई खडको करणो,
सान्ति अर भाईचारै मे
वदूक कुण बाप खरीदै
डोंग बाज्या ही फायदो
आधै नैं ही दीसै
माग मे ही वधै तेजी तो।
आदमी मे पमुता जगावण
अर एक रा च्यार करण
रचीजै विलास रा
नागा, अभागा साधन
वणै टाळा इसी तिरछी
सूतीजै गरीव कमाई
अर ढूकै,
ठाई जाग्या मतोमती।

ज्यू ज्यू टाळ वधै
श्रम चूसीजै
वीरी नाडा निकळै
चीचड चिलकै
पण अवाडो—
धराधेन रो सूकै
दिन तोड् चावै निर्धन
पण 'चक्रव्यू' लम्वो
किया वचै ?
फीको लागै अठलो सुख
वैभव रै पुतळै नैं

धरती तो श्रम नै तरसै
पण सवारी वीरो—
सजै चाद नै।
आवतो—
अणमावतो वठै सू
लावै अरबू रिपिया रो
एक डगळियो सूनो
पण आवै वीरा
किसा हीग फिटकडी
भूखी मेनत नै चाईजै
आज री रोटी ठडी-वासी।

निर्धनता, अर नागी पसुता
मेटण मे चुप्पी
पण परीक्षण आघा
भीसण बमां पर भूगर्भी
धुवो धरती रै धन रो
विस पून मे भरै
सून मे उडै,
पाळै मरता, पूर मागता
भटकता टोळा अधनागा
फूस री छात तरसै
पण पोतडिया मे बिगडचो वैभव
आभै मे आवास रचण री सोचै।
ज्ञान-विज्ञान जद
आंधै मालक आगै
पूछ हिलावै तळवा चाटै
रूप रूळै गळिया मे
लोटा पर लाज विकै
तो आभो रूसै
धरा अमूजै
उथप्योडी मा
ले आभै नै आंख्या मे

चढतां ही नाव जूनी
किनारा मुळक्या
चाल नदी री वधगी
छोड वा
वर्तमान री तिरसी धरती
भूत रै पाड पर
एकर पाछी चढगी
ईं जगळरी—
हवा इसी ही
चमत्कारी अर जीवण दाई।
खडी जवानी री थळी पर
दीसै अवार सामनै मनै
एक जाट री बेटी
उवसता गाल
उभरती छाती
चिलकतो चैरो
गोरी गठीली,
खखहीण—
आंख्या रो आकास
वण जीवण री सतमीली घाटी
पार करी ओजू
मील पन्द्रै ही
पैरचाँ रातो झुगलियो
एक मटमैली काछडी
खेत मे काम
कुवै सू घडा
गाँव रै आँगणै,
रोही रै पेट
आधी गिणै न पाछली
निरभै अछूती
फिरै चौगडदी
साव निहत्थी

सेरणी—वेटी आदमी री ।

इसी एक नही
म्हारी निजर री झील मे
वैठ आपरी नाव
हरिजन री—बामण री
तिरै दिस दिस कित्ती ही ।
ईं ऊमर रा ही
छोरा कित्ता ही
एक कुडतियो
एक लगोटी
हाथ मे गेडियो
कांधै लोटडी
फिरै रिध-रोही
मिलै रात-बिरात
हँस'र निकळै,
ढकी आग,
पण मजाल है
चेतना रै गगाजळ मे
तिरै फूस
उठै ताप
आवै बदबू कठै ही ।

जीमण नै दही-दूध
छाछ-रावडी
कादो,
चड्डी रोटी
गळी री काकी बडिया
बूढी दादी
थेउ-थपेउ
जिमावती चूरमो
घालती खीर मे घी

करती जीसोरो
रळी काढती मन री।
याद आवता ही,
खीर मे घी
म्हारी आंख्या आगं
एक पाडोसण काकी
थिरक उठी एकाकी।
पतळा होठ
चिलकती आंख्या
फूठरी किन्नरी सी
सोनं री देह मे
रूपं री बत्तीसी
पण मन-रो फुठरापो
बीसू ही की बेसी
बा कटती डील सू
जुडती मन सूं।
राखती गांव री पीड मे पांती।
घडीजी बा क्देई
त्याग री
महीन रगीन ऊजळी माटी सू
धरती खातर नही
हुवै सायत सरग खातर ही
पण जाणू—
बरजता बरजता भाग रै
करली मनस्या बण धरती कानी
अर कर थडडो,
उतरगी गांव मे बिना निसरणी,
सरग री नही,
बा धरती री प्रेमण ही।

ही बीरी आस्था गैरी
कै अरपस्यू पसीनो धरती नै ही

आज नही तो काल
रचस्यू सरग बठै ही।
बीरो एक बेटो
म्हारो साथी
जी री जडी लगोटियो
हुवेलो अट्ठाईस री बी वेळा
सायत आज वा
साठ सू एक चौकडी
आगै बधगी
कुण जाणै
है का ससार छोडगी।
जी मे आई
जीसोरो हुवे
मिलू जद ही।

घर मे गयो
एक थाळी पर बैठी
होळै होळै
दळियो चाटै ही
मनै वा ही लागी।
आख नीचै मस्सो
चैरै पर सळ ही सळ
न दात
न दिस्टी ही सावळ
सेंवता
धरती री आधी,
सूकगी झील
बचगी दळदळ।
तदूरो पीचीजग्यो इसो
ओळखणो ओखो हुग्यो—
एकर तो।

चूल्है कनै
एक छोरी बैठी
बरस पन्द्र-सोळै री
रातो,
पसीनो झरतो झुगलियो
मटमैलो कच्छो
चैरै पर घूमती उदासी
पखो करती होठा रै हाथा सू
ओग नै तेज करै ही।
थेपड्या गीली
का की धूड ही बामे
आख झरै, मू रातो
चूल्हो उदास,
धुवो बघतो।
एक छोरो, दो छोरी
फार्क हा एक थाळकियै मे
बाजरी री गूघरी
साव लूखी।
खाडे एक बिलोवणै मे
दीस्या अळिया गोहू की
एक बाटकियै मे
अधकीलोक, चीणी गूगळी
पगा रै हाथ लगा,
हू बोल्यो 'काकी ?
वा अचाणचकी चमकी
थाळी नै छेडैकर
माय री माय की मेळी हुई
बोली 'बेटा चैरो तो दीसै
पण बळै ओळखीजै कठै ?
आख्या पर थारै चश्मो
बोली अणसैधी
वेस की ओपरो दीसै।"

हू बोल्यो,
"हू तो रामलो,
बेटो रतनै रो ।"

'रामलो !'
होठा सू खाली,
इत्तो ही निक्ळयो ।
बीजळो री फुरती सू
दळियै रो हाथ
म्हारै सिर पर राख
कुण जाणै वा कठै पूगगी
पण आगळचा, दूजै हाथ री
चालै रुक-रुक मतै ही
अर देखता देखता वा
धरती सगळी नापी
ठोडी सू ले'र गाला ताईं ।
भाव विभोर
आख्या टप-टप
गळो रुधग्यो
भूलगी एकर सगळो की
की रुक'र बोली,
"किया आयग्यो आज,
रस्तो भूलग्यो ?
जुग बीतग्या
सुधबुध तो कदेई लेवतो ?
इतो निरमोही
थारै भावै काकी मरगी ।"
जीभ रुकगी
पण आख्या चालै ही ।

हू बोल्यो, 'काकी !
धीरज राख

तू जीम एकर
हू पगा बायरो कृतघण
थारो ओळभो सिर सर।"
म्हारै सामनै
एक रील घूमगी
जुगा पुराणी
गुण मे गगा-जमना सी
छप्पर मे दो गाय खडी
हारै मे
मटकी सी मोटी हाडी दूधभरी
चादी रै पाणी पर दीसै तिरती
जीवण थरकण
जीवित सोनै री रोटी।
आज पूनम, काल सोमोती
वा रोटी,
मिलती म्हा दोना नै आधो-आधी
अर खीर मे घी कदेई
एक टीपली।
रील चलै
बा पुरसै।
एक आधो छोरो
एक नागळी छोरी
वूढी कोटवाळी
एक अधमाणस नाई
लै जावै एक कटोरी खीर
आधी पडदी रोटो
आज हुवै अचम्भो
धीणै री धिरियाणी बा
चाटै लूखो दळियो।

वण चुळू करली
मैं पूछ्यो, "काकी !

तू पुरस्या करती
खीर मळाई
आज लूखो दळियो
बिना छाछ ही ?"
झू पडै रै धू वटै आकास मे
ले आक्रोस अर उदासी
बाणी बीरी बिखरगी ।
'ओ राज अर छाछ
आस सपनै मे ही मत कर
की घोळी धार
बापरै गाव रै काळजै
सूतीज बो सू डी ताईं
ट्रक मे चढै
सुणू बो दिल्ली पूगै
टावर तरसै
सामा जोवै
नाळा पटकै बूढा
पण डोकरडी रै कूक्या
कद खीर रधै ?
छाछ विना हियो अमूजै
पण जावणो कीरी फाड़ू
बता किया मिलै ?

हूं बोल्यो,
"अबै तो राज आपणो काकी
कुण फासी घालै
नही सरै तो मत बेचो ।"
काकी बोली
"नागा काईं धोवै निचोवै
काकी री तो गाया मरी क्देई
दळियो मिलतो रैसी
तो ही राजी,

पण ढग देखता
ओखो लागै वोही
रीरी करती
दिन तीन फिरी है छोरी
जद दीस्या है की दाणा
अर आधो कीलो चीणी गूगळी ।
मूफाई लाता सू किचरै
पेट ढकू तो सिर उघडै
राज आपणो आछो भाई,
पण तू ही बता,
जीणो इया किया हुवै ?
"काकी,
गाँव बधग्यो खासो
को वदळग्यो लाग्या ?"
मैं पूछ्यो ।

"हाँ लाडेसर
गाँव वदळग्यो—
वधग्यो दोनू ही,
साळ पर चढ र
सिड्या देख तू
ठकै पर आदमी बोलसो,
तो फूल झडसो,
मैंक नाक मे नही
काना मे पडसी ।
लारलै बरसा
कतल हुग्या दो आदमी
एक मरग्यो
गोळी दो वार चालगी
लोगां रा कान हुग्या काचा
जीभ ढीली
आख आपस मे बधगी ।

दो दूकान चाय री खुलगी
आणो-जाणो स्सोरो
लोरी लागगी
आपसी ईसकै स
गांवरी छोरचा दो पार हुगी,
कोई ट्रक मे वैठ
वीनणी एक पजाब मे वडगी
गांव रै गोरवै,
खुसगी दो तुळछला री लाज,
दो दफै,
मरगी एक बळ'र,
पूरी हुई दो
कुअै मे पड'र,
चोरी तो हुगी
गांव मे रोटी रावडी
म्हारै कानी देख'र,
काकी एकर चुप हुगी ।

हूँ बोल्यो "काकी
की आगै कह
कथरी यारी सोधी सादी
वाल्णी लागै
रमै काळजै।"

"सुण भागी,
नुई पुराणी देखी भोगी
कैणी आई, कहनाखी ।"
अर वा—
लागी बोलग पाछी हो ।
"रेडिया वधग्या
खडी हुगी टकी
लागग्या नळ

झाड़ा केई घलाया
पण खूटी नैं वूटी कद
वै ही पूरा हुया।"

हर सळ में वीर
पीड अर चिंता
जरूर सोई है ली
पण अवार,
बी घिसी आरसी पर
न खख न उदासी
तो ही म्हारै छितिज पर
आसका एक
जीभ नैं पूछण सू रोकै ही
छेकड पूछ लियो मै
"काकी !
सुगनो, म्हारो साथी
किया काँई ?"
"हा भाई,
दोरो स्सोरो सुगनो लाई
उदर पूरणा करै किया ही
पण तीन साल हुया
मरी बीनणी
कोकळ नान्ही
म्हारै बधगी
किरियावर कीन्है
अगलो पाणी पासी
जद पीणा पडसी।
बैं पीणा पडसी
तो रोगो क्यारो
पीस्यू राजी-राजी।"

"काकी, सुगनो अबार कठै ?"

"लाडो, बीकानेर बतावै
बजरी काढै, ट्रक भरावै
तीन महीना हुया गयै नै
डोढ सौ भेज्या हा एकर,
मू घाई काना ताईं
चाटग्या सूका ही टीगर
ऊपरली रत है,
आवै तो की सिर साभै
हळहाल जचावै
आख्या फाड अडीकू
नितरा काग उडाऊ।
धरती देवै साथ
मनचाया की हुवै ऊमरा,
तो सगळा सू पैला
छोरी रा हाथ करू पीळा
देख-देख छोरी नै
रातू नीद ऊचटै
पण घर मे नही अखत रा बीज
अेढो बता किया रचीजै ?

हूँ दो महीना सू अगसारी
रात नै टसकू
भावै तो—
दळियो दिन मे दो कुडछी
आयो है
तो सुगनै सू जरूर मिल
अर काकी रा समाचार किया ही
पूगत कर।"

"काकी, समाचार नही
हूँ पाछो आस्यू
बीनै सागै लास्यू

अर बीरै सागै बैठ आगणै
थारै हाथां एकर
बिना फिकर
जीमस्या रोटी मनभर ।
काकी फेर तो राजी ?"

"तू राजी
तो हूँ राजी
अर आयां दोना सागै
राम राजो ।"

हूँ जावण लाग्यो
तो हुगी काकी
एक मचलो पर आडी ।
बोली, "भँवरी,
कावळ नाख, ताव चढै
नाखी कावळ, काकी धूजै,
मैं हाथ लगायो
सास जोर सू, डील सिकै
टाबर बिलखा, छोरी देखै ।
सोच्यो मैं,
'काकी रै ओ अभ्यास रोज रो
आपानै, आणो काल किया ही पाछो
हूँ लोरी चढग्यो ।
हूँ तीन च्यार खाणा मे घूम्यो
ठा लागी,
कै हप्तै पैला
एक खाण धिसक गी
मरग्या बीमे दो आदमी
एक सहरी माळी-दूजो सुगनो
लावारिस लास पुलिस बाळदी ।
सुणता ही आ अणचीती

म्हारा पग चिपग्या
धडकण बधगी
काई सोची, काई हुयगो
सोचू सगळी चेतना वीरो
घावा स रूधी,
आ नुई बरछी
ई आकासी विजळी रा सुर
वीरै काना सू टकरासी ज्यूही
तो डगळिा झरती
बा जूनी हेली
पून मे मिलसी
धरती पर पडनै सू पैली।

बा सैदे भूगोल
बीमे पोडा रा उठता भाखर
चालै चिन्ता री अणगिण धारा
दुविधा री घूडभरी आध्या
मैदानी धरती
ढकली रेगिस्ताना
अब बीमे, विस्वियस फूटसी
घूमतो खुद री कीली पर
बा थिर किया ऊभसी
अर किया देखसी
भोळी बिलखती बेबसी
जे बा खडकै सू
पैला ही उडगी
का उडी पछै तो ?

सोचै हो हूँ
दिसाहीण अधकार मे

एक उदास सञा

सात आठ झूपडा झूपडी,
लेवडा उतरी—
केई कोठी कूपली
गळचोडो फूस ओढचा
टैम सू पैला ही वो
खूसग्यो केई जाग्या ।
तेडा चाल्योडी,
तिणकला है च्यार—
जिकाही उडावै आंधी
सिर मे टाक्या
कुण देवै चोपा
जूझतै आसरा रै चाद्या पडगी ।
पढै फूस झडै काकरा
जडा गळै
विला मे बाडी बिच्छू बात करै
कै आ मे मानखो किया वसै ।

भूख अभाव सू सतायै मानखै रा
पडग्या दरपण धुंधळा

बीनै और तो कुण जोवै
लगा टकटकी देखै गिनारघा।

एकै पासै कोठी स्सारै
रूहा ठीकर ठीदा अळगा
दोच्यार घडा पडघा
सियाळै किरै
उनाळै उकळै,
पाणी परिया सू लावै
घी सो वरतै
कुत्ता कागला कठै जावै
अठै ही ढूकै
तावै आवै तो कोई परिया करदै
नही तो धिकै ज्यू ठीक है
किसी जनेऊ टूट ?

टीगर अध-उघाडा
पसेव रा रीगा
जट मे जुवा, मल जमै
सियाळै धूजै
चुभतो डाफर
हाड किण किण करै,
जियो मरो
कुण करै आरी चिंता
माख मे वात करै ऊन रा बौपारी
'आरो सी बकरिया चरै"।

न रासन मे चीणी
कुणदै किरासणी

एक उदास संझा

सात आठ झूपडा झूपड़ी,
लेवड़ा उतरी—
केई कोठी कूपली
गळचोड़ो फूस ओढचा
टैम सू पैला ही वो
खूसग्यो केई जागया।
तेड़ां चाल्योडी,
तिणकला है च्यार—
जिकाही उड़ावै आंधी
सिर में टाक्या
कुण देवै चोपा
जूझतै आसरा रै चाद्या पडगी।
पड़ै फूस झडै काकरा
जडा गळै
बिला मे बाडी बिच्छू बात करै
कै आ मे मानखो किया वसै।

भूख अभाव सू सतायै मानखै रा
पडग्या दरपण धुंधळा

वीनै और तो कुण जोवै
लगा टकटकी देखै गिळारघां।

एकै पासै कोठी रुसारै
रूहा ठीकर ठीदा अळगा
दोच्यार घडा पडया
सियाळै किरै
उनाळै उकळै,
पाणी परिया मू लावै
घी सो बरतै
कुत्ता कागला कठै जावै
अठै ही ढूकै
तावै आवै तो कोई परिया करदै
नही तो घिकै ज्यू ठीक है
किसो जनेऊ टूटै ?

टीगर अध-उघाडा
पसेव रा रीगा
जट मे जुवा, मल जमै
सियाळै धूजै
चुभती डाफर
हाड किण-किण करै;
जियो मरो
कुण करै आरी चिंता
माख मे वात करै ऊन रा बौपारी
"आरो सो बकरिया चरै"।

न रासन मे चीणी
कुणदै किरासणी

कुण परमिट काटै
कीनै दोरी
काळजै कोरै लागै ?

सहर जावै कदेई
कोई पूर-पल्लो
लूण-मिरच
लावै दाणा वासता—
चुगाव किरकिर रा
वै ही ठोडो रै हाथ लगा
काया नै भाडो देवण
ला' र उकाळलै
हाथ आवै जिसा ।

भागसू जे छाट पडै
धोरिया की मैर करै
तो च्यार दिन की,सावळ कढै
पण, किसो एक रोग
छाटी दाणा माथै
किता बहरूपिया
किता भख लेवा भूत फिरै
बाठ पर कावळ दीसै, कुण छोडै ?

ऊमर रा दुखी बापडा
फेर ईटा रै भट्ठै
माटी खोद खदेड
दिन भर ईंटा काढै
का सडक किनारै

पटकै घूमरा
काकर नाखै
का खाण मे कठै ही
ऊडा वडै
जियै तो घर
नही तो किसी दवाई
है हर री पेंडी,
काया पडै जठै ही ।

मिनख जमारो किसो वार-वार
कुत्तै री मौत जूण हारदी—
कुण चितारै
कीडी नगरै री कीडी
किया वा फिचरीजी किया मरी ?
एक वादरो मरग्यो तो
हुयो किसो वदरावन खाली,
कोई लूटो चोर मरै तो
सोक सभा, रेडियो अैलान
हुवै दफ्तरा मे छुट्टी ।
आँधी राजनीति रै आभै नीचै
आनै फूटी आख्या सू ही कुण देखै
हा, पाच साल हुवै क्देई तो—
जीपा मे बुगला आवै
हसला री बाली मे—
चीणी रा घोरा माडै
टुकडो की सोच' र नाखै ।
गरीव ठगावै
फेर पाच साल कूको
भाठो फैक्या पछै काई—
मौज करो ।

गूज्या सुर, 'घूमो पाछा'
आस्था भागती ठैरी
मुडग्या,
हेलै सागै पग रूस्योडा ।
गुरु बुचकारचा समझाया
"बाळका
एक-एक टुकडो काढ
जिया निकळग्या थे
ठीक बिया ही
थारा अै सगळा साथी
रूस-रूस
टुकडो-टुकडो
काढ चित्र सू टुर पडसी
तो खाडै बाडै मानचित्र मे
दीखसी खालेड धणखरो
लारै जुंवा रैसी,
अर एकला थे टुरचा किया
ओ मानचित्र तो सगळा री पूजी—
सगळा रो साथी ।"

बाळक ही तो हा
विकाळग चित्र नै देख
बात समझग्या
दोनू टुकडा
फिट किया चित्र मे चुपचाप जिया ही
मानचित्र पाछो मुळक्यो,
चमक उठी बचीसी
सगळै चैरा पर सन्तोस बिखरग्यो ।

आज बै बाळक बणग्या बाप,
तो मनमे नुंई आसा जागी,

कै जुड-जुड टुकडा एक प्राण मे
आभा धरा कोर पर
मानचित्र री ओर चमकसी
पण, लागै, कात्यो हुवै कपास
सराई खीचडी दांता चढसी ।

आज पद-पइसै रा पडै गडा,
डांफर चालै भाई भतीजावादो
तो रूम-रूस जणो-जणो
वाध-वाध—
डोळा पर गधारी पाटी
खीच धिगाणै प्रान्ता रा टुकडा
भूल पूर्णता री पाठ पुराणो
उथळै जुगा पुराणी सागण गळती,
पण, कादै पर किलो रचण री
आ आंधी ममता
सत्ता री सरता मे दाव मानखो
मानचित्र रो उणियारो
कुणजाणै किया राखसी ?

हुसी ओ मानचित्र जे
टुकडा-टुकडा मे खडित
तो मोटी चिन्ता—
धरती पर सावत कुण वचसी ?

हुसी टुकडो एक
पूरो हिन्दुस्तान कदेई ?
अरे, ढीला पडग्या पेच
माथै री क्यो चैन उतरगी ?
तो ?

चढतां ही नाव जूनी
किनारा मुळक्या
चाल नदी री बधगी
छोड बा
वर्तमान री तिरसी धरती
भूत रै पाड पर
एकर पाछी चढगी
ई जगळ री—
हवा इसी ही
चमत्कारी अर जीवण दाई।
खडी जवानी री थळी पर
दीसै अवार सामनै मनै
एक जाट री बेटी
उवसता गाल
उभरती छाती
चिलकतो चैरो
गोरी गठीली,
खखहीण—
आँख्या रो आकास
वण जीवण री सतमीली घाटी
पार करी ओजू
मील पन्द्रै ही
पैरयाँ रातो झुगलियो
एक मटमैली काछडी
खेत मे काम
कुवै सू घडा
गाँव रै आँगणै,
रोही रै पेट
आधी गिणै न पाछली
निरभै अछूती
फिरै चौगडदी
साव निहत्थी

सेरणी—बेटी आदमी री ।

इसी एक नही
म्हारी निजर री झील मे
बैठ आपरी नाव
हरिजन री—बामण री
तिरै दिस दिस किती ही ।
इं ऊमर रा ही
छोरा कित्ता ही
एक कुडतियो
एक लगोटी
हाथ मे गेडियो
कांधे लोटडी
फिरै रिंध-रोही
मिलै रात विरात
हंस'र निकळै,
ढकी आग,
पण मजाल है
चेतना रै गगाजळ मे
तिरै फूस
उठै ताप
आवै बदबू कठै ही ।

जीमण नै दही-दूध
छाछ-राबडी
कादो,
कडूढी रोटी
गळी री काकी वडिया
बूढी दादी
थेउ-थपेउ
जिमावती चूरमो
घालती खीर मे घी

चूल्है कनै
एक छोरी बैठी
बरस पन्द्रै-सोळै री
रातो,
पसीनो झरतो झुगलियो
मटमैलो कच्छो
चैरै पर घूमती उदासी
पखी करती होठा रै हाथा सू
ओग नै तेज करै ही।
थेपडचा गीली
का की घूड ही वामे
आख झरै, मू रातो
चूल्हो उदास,
धुवो बधतो।
एक छोरो, दो छोरी
फाकै हा एक थाळकियै मे
वाजरी री गूघरी
साव लूखी।
खाडै एक विलोवणै मे
दोस्या अळिया गोहू की
एक बाटकियै मे
अधकीलोक, चीणी गूगळी
पगा रै हाथ लगा,
हू बोल्यो 'काकी' ?
वा अचाणचकी चमकी
थाळी नै छेडैकर
माय री माय की भेळी हुई
बोली 'बेटा चैरो तो दीसै
पण वळै ओळखीजै कठै ?
आख्या पर थारै चश्मो
बोली अणसैधी
बेस की ओपरो दीसै।"

हू बोल्यो,
"हू तो रामलो,
बेटो रतनै रो ।"

'रामलो !'
होठा सू खाली,
इत्तो ही निकळयो ।
बोगळो री फुरती सू
दळियै रो हाथ
म्हारै सिर पर राख
कुण जाणै वा कठै पूगगी
पण आगळया, दूजै हाथ री
चालै रुक-रुक मतै ही
अर देखता देखता वा
धरती सगळी नापी
ठोडी सू ले'र गाला ताईं ।
भाव विभोर
आख्या टप-टप
गळो रुधग्यो
भूलगी एकर सगळो की
की रुक'र बोली,
"किया आयग्यो आज,
रस्तो भूलग्यो ?
जुग बीतग्या
सुधबुध तो कदेई लेवतो ?
इतो निरमोही
थारै भावै काकी मरगी ।"
जीभ रुकगी
पण आख्या चालै ही ।

हू बोल्यो, 'काकी !
धीरज राख

तू जीम एकर
हू पगा बायरो कृतघण
थारो ओळभो सिर सर।"
म्हारै सामनै
एक रील घूमगी
जुगा पुराणी
गुण मे गगा-जमना सी
छप्पर मे दो गाय खडी
हारै मे
मटकी सी मोटी हाडी दूधभरी
चादी रै पाणी पर दीसै तिरती
जीवण थरकण
जीवित सोनै री रोटी।
आज पूनम, काल सोमोती
बा रोटी,
मिलती म्हा दोना नै आधी-आधी
अर खीर मे घी क्देई
एक टीपली।
रील चलै
बा पुरसै।
एक आधो छोरो
एक नागळी छोरी
बूढी कोटवाळी
एक अधमाणस नाई
ले जावै एक कटोरी खीर
आधी पडदी रोटी
आज हुवै अचम्भो
धीणै री धिरियाणी बा
चाटै लूखो दळियो।

बण चुळू करली
मैं पूछ्यो, "काकी!

तू पुरस्या करती
खीर मळाई
आज लूखो दळियो
बिना छाछ ही ?"
झू पडै रै धू वटै आकास मे
लै आक्रोस अर उदासी
वाणी बीरी बिखरगी ।
"ओ राज अर छाछ
आस सपनै मे ही मत कर
बी धोळी धार
बापरै गाव रै काळजै
सूतीज बो सू डी ताईं
ट्रक मे चढै
सुणू बो दिल्ली पूगै
टावर तरसै
सामा जोवै
लाळा पटवै बूढा
पण डोकरडी रै कूकया
कद खीर रधै ?
छाछ बिना हियो अमूजै
पण जावणी कीरी फाडू
बता किया मिलै ?

हूँ बोल्यो,
"अबै तो राज आपणो काकी
कुण फासी घालै
नही सरै तो मत बेचो ।"
काकी बोली
"नागा काँई धोवै निचोवै
काकी री तो गाया मरी कदेई
दळियो मिलतो रैसी
तो ही राजी,

झाड़ा केई घलाया
पण खूटी नैं बूटी कद
बै ही पूरा हुया।"

हर सळ मे वीर
पीड अर चिंता
जरूर सोई है ली
पण अवार,
बी घिसी आरसी पर
न खख न उदासी
तो ही म्हारै छितिज पर
आसका एक
जीभ नैं पूछण सू रोकै ही
छेकड़ पूछ लियो मैं
"काकी !
सुगनो, म्हारो साथी
किया काँईं ?"
"हा भाई,
दोरो स्सोरो सुगनो लाई
उदर पूरणा करै किया ही
पण तीन साल हुया
मरी बीनणी
कोकळ नान्ही
म्हारै बधगी
किरियावर कीन्हैं
अगलो पाणी पासी
जद पीणा पड़सी।
बै पीणा पड़सी
तो रोगो क्यारो
पीस्यू राजी-राजी।"

"काकी, सुगनो अवार कठै ?"

"लाडी, बीकानेर बतावै
बजरी काढै, ट्रक भरावै
तीन महीना हुया गयैं नैं
डोढ सौ भेज्या हा एकर,
मू घाई काना ताईं
चाटग्या सूका ही टीगर
ऊपरली रुत है,
आवै तो की सिर साभै
हळहाल जचावैं
आछ्या फाड अडीकू
नितरा काग उडाऊ।
धरती देवै साथ
मनचाया जी हुवै ऊमरा,
तो सगळा सू पैला
छोरी रा हाथ करू पीळा
देख-देख छोरी नैं
रातू नींद ऊचटै
पण घर मे नही अखत रा बीज
अेढी बता किया रचीजै ?

हूँ दो महीना सू अगसारी
रात नैं टसकू
भावै तो—
दळियो दिन मे दो कुडछी
आयो है
तो सुगनै सू जरूर मिल
अर काकी रा समाचार किया ही
पूगत कर।"

"काकी, समाचार नही
हूँ पाछो आस्यू
बीनै सागै लास्यू

अर बीरै सागै बैठ आगण
थारै हाथां एकर
विना फिकर
जीमस्या रोटी मनभर ।
काकी फेर तो राजी ?"

"तू राजी
तो हूँ राजी
अर आयां दोना सागै
राम राजी ।"

हूँ जावण लाग्यो
तो हुगी काकी
एक मचली पर आडी ।
बोली, "भँवरी,
काबळ नाख, ताव चढै
नाखी काबळ, काकी धूजै,
मैं हाथ लगायो
सास जोर सू, डील सिकै
टाबर बिलखा, छोरी देखै ।
सोच्यो मैं,
'काकी रै ओ अभ्यास रोज रो
आपानै, आणो काल किया ही पाछो
हूँ लोरी चढग्यो ।
हूँ तीन च्यार खाणा मे घूम्यो
ठा लागी,
कै हफ्तै पैला
एक खाण धिसक गी
मरग्या बीमे दो आदमी
एक सहरी माळी-दूजो सुगनो
लावारिस लास पुलिस बाळदी ।
सुणता ही आ अणचीती